Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol,-05, Issue-III February 2015

महात्मा गांधी दर्शन और अहिंसा

मंजू: शोध छात्रा, जे. जे. टी. यू. चुडेला (झुंझुनू, राजस्थान)

प्रस्तावना:

युद्ध का विज्ञान हमें विशुद्ध तानाशाही की ओर ले जाता है। अहिंसा का विज्ञान ही शुद्ध लोकतंत्र की ओर ले जा सकता है।

लोकतंत्र और साथ—साथ नहीं चल सकते, जो राज्य आम करने के लिए लोकतांत्रिक है, उन्हें या तो खुलकर सर्वसतात्मक बन जाना होगा। या अगर वे सच्चे लोकतांत्रिक बनना चाहते है तो साहसपूर्वक अहिंसक रूप अपनाया होगा।

इस दृष्टिकोण पर विश्वास करते हुए कि राष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा को मान्यता दिए बगैर सांविधानिक या लोकतांत्रिक सरकार जैसी कोई चीज नहीं चलायी जा सकती, मैं अपनी शक्ति अहिंसा को जीवन व्यक्तिगत सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय के नियम के रूप में प्रचारित करने के लिए लगा रहा हूँ।

मुझे लगता है कि मैनें, धुंधले रूप में ही सही उस आलोक के दर्शन कर लिए है, मैं बड़ी सावधानी से यह लिख रहा हूँ क्योंकि मैं यह दावा नहीं कर सकता किं मैं उस नियम को पूरी तरह जानता हूँ अगर मैं अपने प्रयोगों की सफलता से अवगत हूँ तो उनकी असफलताओं से भी अनजान नहीं हूँ, लेकिन मेरी सफलाएं मुझे अमिट आशा से आप्लावित करने के लिए पर्याप्त है।

मैंने प्राय: कहा है कि मनुष्य यदि साधनों की और समुचित ध्यान दे तो साध्य अपने आप दुरूस्त रहेंगें।

अहिंसा साधन है और प्रत्येक के लिए साध्य है पूर्ण स्वतंत्रता। एक अन्तराष्ट्रीय लीग तभी स्थापित हो सकेगी। जब उसके सभी छोटे–बड़े सदस्य राष्ट्र पूर्णत: स्वतंत्र होंगे। उस स्वतंत्रता का स्वरूप संबंधित राष्ट्रों द्वारा अगीकृत अहिंसा की सीमा के अनुरूप होगा।

एक बात निश्चित है कि अहिंसा पर आधारित समाज में छोटे से छोटा राष्ट्र भी स्वंय को बड़े से बड़े राष्ट्र जैसा बड़ा अनुभव करेगा। श्रेष्ठता और हीनता के भाव पूरी तरह मिट जाएगें।

अहिंसा को समर्पित मेरे जैसे व्यक्ति के समाने नतीजा साफ है। जब तक अहिंसा को केवल एक नीति नहीं बल्कि एक जीता – जागता बल एक अलंध्य धर्म नहीं मान लिया जाएगा।

तब एक साविधानिक अथवा लोकतांत्रिक सरकार एक सुंदर स्वप्न ही रहेगी, मैं सार्वभौम अहिंसा के बारे में बड़बड़ तो करता हूँ पर मेरा प्रयोग भारत एक सीमित है। अगर यह सफल हो गया तो दुनिया इसे सहज ही स्वीकार कर लेगी। परज इसमें एक बहुत बड़ा 'लेकिन' है इसमें कितना समय

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol,-05, Issue-III February 2015

लगेगा। इसकी मुझे चिन्ता नहीं है।

घटाटोप अंधकार में मेरी आस्था सर्वाधिक आलोकित रहती है।

अहिंसक राज्य:

अनेक लोगों ने असहमति की मुद्रा में सिर हिलाते हुए कहा है "लेकिन आप आम जनता को अहिंसा नहीं सिखा सकते। यह केवल व्यक्तियों को सिखाई जा सकती है और वह भी इनगिने मामलों में।"

मेरी राय में ऐसे सोचना बडी आत्मकषंचना है। यदि मानव जाति स्वभाव से अहिंसक न होती तो इसने बहुत पहले अपना विनाश कर लिया होता। सच्चाई यह है कि हिंसा और अहिंसा के द्वन्द्व में अन्ततः विजय सदा अहिंसा की ही हुई है।

वस्तुतः हमने लोगों के बीच राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के साधन के रूप में अहिंसा के इस्तेमाल का प्रचार करने के लिए कभी अपेक्षित धैर्य के साथ और पूरा जी लगाकर प्रयास नहीं किया है।

आधुनिक राज्य:

बल पर आधारित आधुनिक राज्य ब्राह्य या आन्तरिक अव्यवस्था की ताकतों को अहिंसक तरीके से मुकाबला नहीं कर सकता। आदमी ईश्वर और धनलिप्सा की पूजा के साथ – साथ नहीं कर सकता। न वह एक ही समय में संयत और क्रोधोन्मल हो सकता है। यह दावा किया जाता है कि राज्य का अहिंसा पर आधारित होना संभव है। अर्थाप्त वह सैन्यबल पर आधारित किसी विश्व गुटबन्दी के विरूद्ध अहिंसक प्रतिरोध का आश्रय ले सकता है।

अशोक का राज्य ऐसा ही था। ऐसे और उदाहरण भी दिए जा सकते है। लेकिन अगर यह भी साबित कर दिया जाए कि अशोक का राज्य अहिंसक पर आधारित नहीं था तो इससे अहिंसा के पक्ष का तर्क कमजोर नहीं हो जाता। उसकी परीक्षा गुणा व गुण के आधार पर करनी होगी।

सैनिक दृष्टि से मजलूत राष्ट्र अहिंसा का प्रस्ताव नहीं कर सकती, तदनुसार यदि रूस अहिंसा की अभिव्यक्ति करना चाहे जो उसे अपनी समस्त हिंसक शक्ति का त्यात करना होगा।

जो बात सही है वह यह है कि जहो कभी सैनिक दृष्टि से प्रबल रहे है वे यदि अपना मन बदल ले तो वे दुनिया और अपने विरोधियों के समक्ष अहिंसा का प्रदर्शन ज्यादा बेहतर ढग से कर सकते है। इस प्रकार से गांधी दर्शन के राज्य और लोकतंत्र एक सामसामयिक तुलनात्मक अध्ययन पर बल दिया गया है। राज्य क्या है और लोकतंत्र क्या है इन दोनो का तुलनात्मक अध्ययन अलग–अलग ढ़ग से किया है। राज्य में राज्य से संबंधित शू–भाग क्षेत्र और निवास स्थान इन सभी का वर्णन किया जाता

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol,-05, Issue-III February 2015

है। और लोकतंत्र एक "जनता का जनता के द्वारा चुने गये सदस्य ही लोकतंत्र है"लोकतंत्र की सर्वश्रेष्ठ परिभाषा इब्राहम लिंकन ने दी थी। इसके बाद कोई कई ने भी परिभाषा दी है इस प्रकार से हम कह सकते है कि राज्य और लोकतंत्र दोनों का अध्ययन आसानी से कर सकते है। अत: हम कह सकते है कि आधुनिक राज्य का भी वर्णन निम्न प्रकार से किया जाता है। गांधीजी ने हिंसा अहिंसा सत्य अरिग्रह अस्तेयक इन सभी का वर्णन भी किया गया है।

शोध साहित्य की समीक्षा:

1. डॉ. जी. पी. नेमा – गांधी जी का दर्शन (2004) —
   गांधी जी कों धर्म, सत्य, ईश्वर, अहिंसा और मानव पेम का पुजारी बताते है साथ ही अहिंसा के बारे में गांधीजी ने कहा था कि अहिंसा पाप के समाने समर्पण करने का नाम नहीं है।
2. तारापाल गांधी का जनतंत्र (2006) :—
   गांधी जी के त्याग और बलिदान के बाद जिस जनतंत्र की कल्पना की थी। वह साकार नहीं हुआ।
3. विवेकानन्द तिवारी — अद्भुत मत के सच गांधी और अम्बेडकर (2011)
   गांधीजी अस्पृश्यता को हिन्दू धर्म पर सबसे भयंकर कलंक मानते थे। उनका विश्वास था कि अस्पृश्यता को मान्यता देकर हिन्दू धर्म ने घोर पाप किया।
4. प्रो. पिद्या जैन गांधी दर्शन समसामयिक संदर्भ (2012)
   गांधी दर्शन पर अनेका नेक पुस्तकें निरन्तर प्रकाशित हो रही है मार्क्सवादी, उदारवादी, नारीवादी व्याख्याताओं से लेकर गांधी का नेतृत्व शैली परस्परावादी पर लिखा जा रहा है।
5. डॉ. ओमप्रकाश पाण्डेय — महात्मा गांधी का सम्यक दर्शन (2013)
   महात्मा गांधी का जीवन दर्शन तथा परामार्श की भावना रही दक्षिण अफ्रीका में उनका वास्तविक जीवन का दय हुआ।

शोध के उद्देश्य:

सच्ची सफलता के लिए मनुष्य किसी उद्देश्यों को लेकर अग्रसर होता है। बिना उद्देश्य के अनुसंधान अधुरा रहता है।

1. गांधीजी के एक आदर्श राज्य के विचारों का अध्ययन करना।
2. गांधी के राज्य व्यवस्था के धार्मिक अध्ययन करना।
3. गांधीजी के जीवन क्षेत्र में सत्य, अहिंसा लेखन की स्वतंत्रता के विचारों का अध्ययन करना।

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol,-05, Issue-III February 2015

4. गांधीजी के अनुसार धम्र, जाति रंगभेद सम्पति के भेद को समाप्त करते हुए शांतिमय राज्य का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि:

प्रस्तुत शोध की पद्वतियों विवेचनात्मक ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक है। लोक कल्याण के राजनैतिक चिन्तन में उपलब्ध सैदान्तिक पक्षों का निर्वचन एवं विश्लेषण किया गया है।

निष्कर्ष:

वर्तमान में संविधन के द्वारा भारत में एक प्रजातंत्रात्मक गणराज्य की स्थापना की गई। भारतीय राज्यतंत्र भारतीय संविधान के प्रावधनों के अनुसार कार्य करता है।

राज्य की संरचना शक्ति, पुलिस, सेना जैसा हिंसा प्रधान होने के साथ — साथ ऊपर से नीचे की ओर सता प्रवाह पर आधारित है। संविधान में मौलिक अधिकारों के रूप में राज्य के ऊपर प्रतिबंध तो लगाये गये। किन्तु व्यक्ति की आत्मोत्थान की कोई दिशा नहीं दिखायी गयी।

संदर्भ:

1. विस्तृत अध्ययन हेतु देखे — शर्मा, बी.एम. शर्मा, रामकृष्ण दत्त शर्मा, सविता गांधी दर्शन के विविध आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2002 (पृ.सं.131)
2. विस्तृत अध्ययन हेतु देखे — सिंह दशरथ 'गांधीवाद को विनोषा की देन' बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना, 1975 (पृ. सं. 385)
3. बोंस, एन. के. स्टकीज इन गांधीज्म, प्रथम संस्करण, इण्डिन एसोसिएट पब्लिशिंग कंपनी, कलकत्ता 1947 (पृ. सं. 202/03)
4. वर्मा, एस. एल. एवं शम्प्र, बी. ऐम. 'भारतीय राजनीतिक विचारक' पंचशील प्रकाशन, जयपुर (1997) (पृ.सं. 261)
5. सिंह प्रताप, गांधीजी का दर्शन, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर 1997 (पृ.सं. 68)

www.ghrws.in